मोक्षेन्द्र मनोज

प्रगति

ई-मेल:drmanojs5@gmail.com

प्रगति बेहद चर्चित थी। हो भी क्यों ना? आज़ादी के बाद से ही उसका चहुंओर प्रशस्तिगान हो रहा था। इससे वह भी फूली नहीं समा रही थी। उसका बहुत जी कर रहा था कि वह लाइब्रेरी की किताबों से बाहर निकलकर अपनी लोकप्रियता का जायज़ा ले। वह देखना चाह रही थी कि टोलों-मोहल्लों, नगरों-शहरों में उसकी चर्चाएं कहाँ-कहाँ हो रही हैं और कितने जोर-शोर से हो रही हैं।

उसके उतावलेपन को देखते हुए लाइब्रेरियन ने कहा, "अभी तुमको किताबों से निकल कर बाहरी दुनिया की सैर करने की अनुमति नहीं है। तुम जहाँ हो, वहीं महफूज़ हो।"

लाइब्रेरियन की बात सुनकर प्रगति का मुँह सूज़ गया और आँखें निस्तेज हो गईं। वह बोली, "ऐसी पाबंदी मुझ पर क्यों लगाई जा रही है? देखो, लोग-बाग अपने-अपने कस्बों में मेरी उपस्थिति देखने के लिए कितने बेचैन हो रहे हैं!"

लाइब्रेरियन ने कहा, "तुम्हें अभी कई प्रक्रियाओं से गुजरना होगा। पहले तुम्हें किताबों से निकालकर बाबुओं और अफसरों की फाइलों में रखा जाएगा। सरकारी दस्तावेज़ों की सेज पर सुलाया जाएगा। मुनासिब समय आने पर ही हम तुम्हें बाहर आने देंगे और दुनिया की सैर कराएँगे।"

प्रगति को उसकी बात माननी ही पड़ी। बाहरी दुनिया देखने की उम्मीद में वह अपने दिन मजे से गुजार रही थी। लेकिन, तभी चुनाव आ गया। एक दिन, दस्तावेजों में सोते-सोते वह लाइब्रेरियन के चेहरे को बड़ी आशा से निहार रही थी। लाइब्रेरियन के बगल में बैठा सरकारी बाबू उसकी इस बेचैनी को बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने कहा, "अभी तुम्हें बाहर नहीं जाने दिया जाएगा। बाहर चुनाव-रैलियों की भीड़-भाड़ में तुम मर-पिच जाओगी। यूँ भी तुम फाइलों में सोई-सोई आलसी हो गई हो। जब चुनाव के बाद भीड़ में कमी आएगी; हाँ, तभी तुम्हें बाहरी दुनिया की सैर-सपाटा करने की इजाज़त होगी।"

प्रगति को यह इंतज़ार भी भला लगा। चुनाव-रैलियों में नेताओं की भाषणबाजियों और पार्टी कार्यकर्ताओं की चुहुलबाजियों को सुन-सुन कर उसका खूब मनोरंजन हो रहा था। भाषणों में एक अहम मुद्दा तो ख़ुद वही यानी प्रगति थी। चुनांचे, चुनाव के बाद रिज़ल्ट आया और नई सरकार सत्तारूढ़ हुई। नई सरकार ने अपने बाबुओं को हुक्म दिया कि प्रगति की फाइल पेश की जाए। प्रगति की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कल्पना करने लगी कि अब वह फाइल से आज़ाद होकर बाहर निकलेगी और स्वयं को गली-गली में देखेगी।

सरकार ने बाबू से कहा, "ऐसा करो कि इस प्रगति को जनता की आवश्यकतानुसार अलग-अलग कई फाइलों में रखो।"

प्रगति हैरान-परेशान! उसे कभी इस फाइल में तो कभी उस फाइल में रखा जाने लगा। फिर, एक नहीं, अनेकानेक दस्तावेज़ों में उसे बारी-बारी से पेश किया जाने लगा। इस तरह एक लम्बा समय निकल गया। वह फाइलों और दस्तावेज़ों में पड़ी-पड़ी कभी सोती तो कभी खर्राटे भरती। इंतज़ार में उसकी आँखें भी पथराने लगीं। सरकार और बाबू भी इस बात से निश्चिंत हो गए कि चलो, उन्हें प्रगति को दुनिया दिखाने की ज़हमत से निज़ात तो मिली।

बहुत समय के बाद उसे सोते-सोते अचानक होश आया। तब वह बाबू से मुखातिब हुई, "सर जी, अब मैं बहुत बूढ़ी हो चली हूँ और मुझे दुनिया देखने का चाव भी नहीं रहा। अगर अब आप मुझसे कहोगे कि बाहर निकलो और दुनिया देखो, तो मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगी। ऐसे में, आप मुझ पर एक कृपा कीजिएगा, मुझे फाइलों में दस्तावेज़ों के बीच ही रहने दीजिए। यहाँ बड़ा चैन-सुकून है। बाकी ज़िंदगी भी मैं यहीं काटना चाहती हूँ।"